अध्याय 20

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 18:18– 21:40

आगे बढ़कर संक्षेप में ***बताएं*** (या अपने नोट्स में से पढ़ें) कि आपने शान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (प्रेरितों के काम 18:18–21:40) से क्या सीखा।
अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) [मसीह में नया जीवन] प्रार्थना: 1यूहन्ना 1:7

क–ध्यान करना

निम्नलिखित याद करने वाले पद को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

प्रार्थना 1यूहन्ना 1:7
पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता हैं। 1 यूहन्ना 1:7

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के हवाले लिखें:

1.ज्योति क्या है?

ज्योति एक ऐसा शब्द है जो परमेश्वर की विशेषताओं तथा चरित्र को दर्शाता है, जैसे उसका प्रेम, धार्मिकता, पवित्रता व उसकी कृपा इत्यादि। यीशु मसीह ने परमेश्वर के गुणों को हमारे बीच में प्रगट किया। यीशु मसीह के अनुयायियों को यह आदेश है कि वे ज्योति में चलें, जिसका अर्थ परमेश्वर के गुणों या स्वभाव के अनुसर व्यवहार करना है।

2. आपके विचार से परमेश्वर, मसीह और मसीहियों को 'ज्योति' कहकर क्यों पुकारा गया?

परमेश्वर को ज्योति कहा गया है। (1 यूहन्ना 1:5)
परमेश्वर सारे शारीरिक व आत्मिक जीवन का स्रोत है। उसी ने संसार भर की सारी भौतिक वस्तुओं को रचा है। उसी ने हमें मसीह की मृत्यु व पुनरूत्थान के द्वारा नया आत्मिक जीवन प्रदान किया है।

यीशु मसीह को जगत की ज्योति कहा गया है (यूहन्ना 8:12)।
यीशु मसीह ने ही हम पर प्रगट किया कि परमेश्वर कौन है, विशेष तौर पर परमेश्वर के गुणों व उसकी विशेषताओं को । परमेश्वर की महिमित विशेषताएं, इस संसार के अन्दर यीशु मसीह के द्वारा अधिकाई से चमकती हैं। यीशु अज्ञानियों को ज्ञान प्रदान करता; उसने पापियों के सामने सत्य प्रगट किया; तथा वह मूर्खों को बुद्धि प्रदान करता। वह अशुद्धों को शुद्ध करता; दुष्टों को धार्मिकता प्रदान करता और नफरत से भरे लोगों पर अपना प्रेम प्रगट करता है। वह दु:खी लोगों को आनन्द की भरपूरी प्रदान करता; वह भयभीत लोगों को प्रोत्साहित करता तथा वह त्यागे हुओं और अकेलापन महसूस करने वालों को अपनी उपस्थिति का एहसास प्रदान करता है।

यीशु , मसीहियों को जगत की ज्योति कहते हैं (मत्ती 5:14)

मसीही लोग अपने स्वभाव से कभी ज्योति नहीं हैं, परन्तु वे इस संसार में परमेश्वर के गुणों को प्रगट करते हैं, विशेषकर उसकी पवित्रता, धार्मिकता, तथा प्रेम (इफिसियों 5:8)

3.' मसीही संगति' का क्या अर्थ है?

मसीही संगति का अर्थ घनिष्ठ सम्बन्ध,सहभागिता तथा साझेदारी है।

मसीही संगति का अर्थ परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के (1 यूहन्ना 1:3; 1 कुरिन्थियों 1:9; 2 कुरिन्थियों 13:14), जगत में रहने वाले दूसरे मसीहियों के (1यूहन्ना 1:7) साथ घनिष्ठ सम्बन्ध, सहभागिता तथा साझेदारी करना है। मसीह के साथ संगति करने का अर्थ मसीह की देह के साथ संगति करना है, जो मसीही समाज या कलीसिया है (1कुरिन्थियों 12:12–13)। मसीही जन अपने आप को बाइबल से शिक्षा पाने व प्रार्थना करने,एक दूसरे के साथ संगति करने तथा ज़रूरत पड़ने पर एक दूसरे की सहायता करने के लिए, तथा एक साथ रोटी तोड़ने व दूसरों को सुसमाचार सुनाने के लिए समर्पित करते हैं(प्रेरितों 2:42–47)। मसीही संगति में मात्र घनिष्ठ संगति ही शामिल नहीं है, वरन इसका अर्थ एक तरफ दूसरों के साथ उनकी आशिषों में भागीदार होना (गलातियों 6:9–10) व दूसरी तरफ उनके दु:खों में शामिल होना है(फिलिप्पियों 3:10)। मसीही संगति में, एक दूसरे के साथ मज़बूत सम्बन्ध का एहसास होना तथा एक दूसरे को भली बातों द्वारा सहयोग प्रदान करना भी शामिल है(2 कुरिन्थियों 8:4)।

मसीही संगति तथा साझेदारी उस क्षण प्रारम्भ हो जाती है जिस क्षण आप सुसमाचार सुनते तथा उस पर विश्वास करते हैं।

मसीही संगति तथा साझेदारी उस क्षण प्रारम्भ हो जाती है जिस क्षण आप सुसमाचार सुनते तथा उस पर विश्वास करते हैं, कि यीशु मसीह सम्पूर्ण मानव जाति के पापों के लिए मरे तथा सम्पूर्ण मानवजाति को बचाने के लिए मुर्दो में से ज़िन्दा हो गय`(फिलिप्पियों1:5)। मसीही लोग अन्यजातियों के साथ असमान जुए में नहीं जुतते (2 कुरिन्थ्यिों 6:14)। मसीही लोग सदैव ज्योति में होकर चलते हैं क्योंकि बिना ज्योंति के संगति करना असम्भव है।

4. यीशु मसीह का लहू का क्या अर्थ है?

'यीशु मसीह का लह' कोई अद्भुत शक्ति वाली जादूई छड़ी नहीं है। मसीही विश्वास या मत में जादू टोने के लिए कोई स्थान नहीं है। यीशु मसीह के लहू का तात्पर्य उस लहू से है जो क्रूस पर बहाया गया था। यह वाक्य यीशु मसीह की मृत्यु तथा उस मृत्यु से विश्वासियों को होने वाले लाभ को दर्शाने वाला प्रतीक है। ज्योति में जीवन व्यतीत करने वाले मसीही अपने पापों का अंगीकार करके अपने पापों से क्षमा प्राप्त करते हैं, क्योंकि यीशु मसीह ने पहले ही उनके पापों के दण्ड को अपने ऊपर ले लिया है।

ख. याद करना व पुनरावलोकन करना

1. किसी खाली कार्ड पर या कॉपी के किसी पेज पर बाइबल की आयत को ***लिखें***/
2. ठीक तरीके से बाइबल की आयत को ***याद करें***/ संगति : 1यूहन्ना 1:7
3. ***पुनरावलोकन***/ दो–दो के समूह में बंट जाएं तथा एक दूसरे से पिछली याद की गयी बाइबल की आयत को पूछें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) [सम्बन्ध] **मसीही विवाह :इफिसियों 5:22–23**

एक साथ मिलकर बाइबल अध्ययन के पाचं कदम वाले तरीके का इस्तेमाल करें तथा 1 थिस्लुनिकियों 4:1–8 का अध्ययन करें।

कदम 1. पढें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें/ आइये हम इफिसियों 5:22–23 को एक साथ **मिलकर पढ़ें**।

आइये हम बारी बारी करके तब तक एक एक आयत पढ़े जब तक निर्धारित आयतें खत्म न हो जाएं।

कदम 2. खोज। पुनरावलोकन

ध्यान दें । इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लिखें। एक या दो बातों को लिखें जो आपकी समझ में आयी हो। उन बातों के बारे में विचार करें तथा उन विचारों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें। (समूह के लोगों को दो मिनट सोचने व लिखने का समय प्रदान करने के बाद, अपने विचारों को व्यक्त करें। आइये हम एक दूसरे के साथ उन विचारों को बांटे जो हमने सीखा या समझा है।
(नीचे कुछ लोगों द्वारा अपने अनुभवों को बांटने के उदाहरणों को दिया है। याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य भिन्न भिन्न बातों को बांटेंगे, यह ज़रूरी नहीं है कि उनके भी अनुभव समान हों।)

5:22,25

खोज 1. मसीही विवाह लगाता यीशु मसीह की सच्चाई का गवाह है।

'पतियों, जिस प्रकार से मसीह ने कलीसिया को प्रेम किया, तुम भी अपनी अपनी पत्नियों से प्रेम करो...'',''हे पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो।'' विवाह निश्चय ही परमेश्वर की दृष्टि में अति आदरणीय रिश्ता है क्योंकि उन्होंने मसीह पति पत्नी की तुलना मसीह व विश्वासियों के रिश्ते के साथ में की है। मसीह व कलीसिया हर एक मसीही विवाह के लिए आदर्श हैं। मसीही विवाह सदैव संसार के लिए एक प्रत्यक्ष गवाही है! मसीही विवाह के द्वारा भी परमेश्वर को महिमा मिलनी चाहिए।

5:31

खोज 2. मसीही विवाह, में अभिभवावकों से आपके रिश्ते बदल जाते हैं।

'इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और दोनों एक तन होंगे।' हर समाज में विवाह एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है, क्योंकि विवाह के दौरान दो युवा जन अपने अपने माता पिता को छोड़कर एक अलग परिवार की शुरूआत करते हैं! विवाह के साथ में आप अपने माता पिता के साथ विशेष सम्बन्ध खत्म हो जाता है और आपके जीवन साथी के साथ एक महत्वपूर्ण रिश्ता प्रारम्भ हो जाता है।

कदम 3. प्रश्न वर्णन

ध्यान दें: इस खण्ड के आधार पर आप समूह से कौन सा प्रश्न पूछना चाहेंगे?
आइये हम इफिसियों 5:22 में दी गयी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जिनके बारे में हम अभी तक नहीं जानते हैं।
लिखें। अपने प्रश्नों को सम्भव स्पष्ट स्वरूप प्रदान करें। उसके पश्चात अपने प्रश्नों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट तक विचार विमर्श करने करने तथा उन्हें लिखने के बाद, सभी लोगों को अपने प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करें।
चर्चा करें। (फिर, उनमें से कुछ प्रश्नों को चुनकर, अपने समूह में चर्चा करते हुए उन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें)
(नीचे कुछ प्रश्नों व चर्चा करने के बाद उत्तरों को उदाहरण के तौर पर दिया गया है जिन्हें विद्यार्थी पूछ सकते हैं)

प्रश्न1. मसीही विवाह की विशेष विशेषताएं क्या होती हैं?

ध्यान दें

1. विवाह परमेश्वर की योजना व संस्थापन है (इफिसियों 5:31)।

सृष्टि के समय, परमेश्वर ने पुरूष की एक जीवन साथी की ज़रूरत को देखा और उसने उसके लिए एक स्त्री की रचना करने की पहल की (उत्पत्ति 2:18–24)। इसके अलावा परमेश्वर ने विवाह के संस्थान को बनाने की पहल भी की। पुरूष व स्त्री के पाप करने से पहले ही परमेश्वर ने विशेष विशेषताओं के साथ विवाह के रिश्ते को स्थापित कर दिया था। विवाह के समय पर स्त्री व पुरूष अपने माता पिता के घर को छोड़ देते हैं। विवाह के सम्बन्ध के दौरान स्त्री व पुरूष एक इकाई बन जाते हैं तथा जीवन भर एक साथ रहते हैं। उनके विवाह के बाद,उन्हें विवाह के दायरे में यौन सम्बन्ध बनाने का आनन्द अवसर प्राप्त होता है। (उत्पत्ति 2:24)

परमेश्वर ने न केवल विवाह के सम्बन्ध को संस्थापित किया वरन मनुष्य जाति के पाप में गिरने के बाद भी विवाह को बनाये रखने का प्रबन्ध किया। यीशु मसीह (मत्ती 19:1–6) और प्रेरित पौलुस (इफिसियो 5:31) दोनो ने इस बात पर

ज़ोर दिया कि विवाह परमेश्वर की ओर तैयार किया गया संस्थान है इसलिए उस सस्ंथान के नियमों का पालन करना बहुत ज़रूरी है।

पुराने नियम के जमाने में, विवाह परमेश्वर व उसके निज लोगों अर्थात इस्राएल के बीच रिश्ते को प्रगट करता है (यिर्मयाह 3)। नये नियम के ज़माने में, विवाह यीशु मसीह व उसके लोगों के बीच अर्थात कलीसिया के बीच रिश्ते को प्रगट करता है(इफिसियों 5)। हालाकिं इस संसार की रीति ने विवाह के मूल संस्थान को बदल दिया है, लेकिन परमेश्वर सम्पूर्ण मानव जाति से चाहते हैं कि वे परमेश्वर के मूल सस्ंथान की ओर वापस लौटें।

(2) विवाह तय या स्वेच्छा से किया जा सकता है (उत्पत्ति 24:3–4, 67; उत्पत्ति 29:17–20)।
पाश्चात्य देशों में पुरूष जिस स्त्री से प्रेम करते हैं केवल उन्हीं से विवाह करते हैं। पूर्वी देशों में पुरूष वर्ग जिस स्त्री को ब्याह लाता है उसे प्रेम करता है। पश्चिमी देशों में लोग वैवाहिक जीवन की शुरूआत भावनात्मक उंमग के साथ प्रारम्भ करते है, तथा बाद में उनके बीच समर्पण किये जाते हैं। पूर्वी देश के लोग एक समर्पण के साथ जीवन प्रारम्भ करते हैं और बढ़े आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। अगर परमेश्वर इन विवाहों का केन्द्र बिन्दू हो तो दोनों ही प्रकार के विवाह कामयाब होते हैं।

3. विवाह एकपत्नीक है(इफिसियों 5:33)
पुराने नियम का इतिहास इस बात का महत्वपूर्ण लेखा रखता है कि कुछ प्रमुख लोगों की एक से ज्यादा पत्नियां थीं। एक से अधिक पत्नियों की वजह से पुराने नियम में केवल जलन,भेदभाव व मूर्तिपूजा की ही बढ़ौतरी हुई(राजा सुलैमान, 1 राजा 11:1–11)

पुराने नियम व नये नियम की शिक्षा हमें स्पष्ट रूप में यह सिखाती है कि बहु–पत्निवाद परमेश्वर की योजना, आज्ञा और संस्थापन के बिल्कुल विरूद्ध था। परमेश्वर ने उत्पत्ति 2:24 में प्रगट की गयी अपनी योजना' पुरूष अपनी पत्नी के साथ जुड़ा रहेगा' को कभी नहीं बदला। परमेश्वर ने बहुवचन का इस्तेमाल करते हुए यह नहीं कहा कि पुरूष अपनी पत्नियों के साथ जुड़ा रहेगा वरन उसन एकवचन का इस्तेमाल करते हुए कहा कि पुरूष अपनी पत्नी के साथ जुड़ा रहेगा।

यीशु ने इस आदेश को मत्ती 19:5 में दोहराया कि, ''पति और पत्नी दोनों एक देह होगें।'उसने कभी यह नहीं कहा कि एक पति बहुत सी पत्नियों के साथ में एक देह होगा। यीशु मसीह ने विवाह के बाहर किसी भी प्रकार के रिश्ते का बहिष्कार किया खास तौर पर वैवाहिक जीवन के यौन सम्बन्धों से बाहर।

और पौलुस ने विवाह के सम्बन्ध में इस आदेश को दोहराते हुए कहा कि पति अपनी पत्नी को प्रेम करे (इफिसियों 5:33)। यह क्रिया ''प्रेम करें' एक लगातार वर्तमान काल में किया जाने वाला अनिवार्य काम है। यह किसी अपवाद के लिए किसी स्थान को नहीं छोड़ता।

परमेश्वर बहुविवाह का बहिष्कार करता है। वह रखैलों को रखने से मना करता है। वह व्यभिचार का विरोध करता है। वह दूसरी औरतों के साथ गुलछर्रे उड़ाने से भी मना करता है।

4. विवाह सम्पूर्ण जीवन काल के लिए है(मत्ती 19:5–6)।
पुराने नियम में मूसा ने लोगों के ' हृदय की कठोरता की वजह से' उन्हें तलाक की अनुमति प्रदान की। लेकिन मूसा तलाक से कभी भी सहमत नहीं था। उसने केवल उस कुरिती को नियमित किया जो पहले से ही इस्राएल के आस पास के देशों में सक्रिय थी और जा इस्राएल को भी भेद चुकी थी। यीशु ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर ने प्रारम्भ में तलाक की योजना को नहीं बनाया था। उसकी आज्ञा है कि ''जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य कभी अलग न करे''(मत्ती 19:1–6)! परमेश्वर तलाक से नफरत करता है (मलाकी 2:14–16)।

बाइबल केवल दो परिस्थितियों में ही तलाक का समर्थन करती है। पहला, जहां पर वैवाहिक जीवन में विश्वासयोग्यता का अभाव हो, जैसे व्यभिचार या लड़ाई झगड़े की बहुतायत, तो उस दशा में तलाक को स्वीकार किया जा सकता है। दूसरा, गैर मसीही जोड़े में, जहाँ पर एक गैर मसीही जोड़े में से एक पक्ष मसीही बन जाता है, और गैर मसीही पक्ष मसीह पक्ष के साथ जीवन व्यतीत करने से इनकार कर देता है, इस दशा में तलाक को स्वीकार किया जा सकता ह ै(1

कुरिन्थियों 7:12–16)। लेकिन परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में रिश्ता एक वाचा है इसलिए मसीही वैवाहिक रिश्ता हमेशा जीवन भर के लिए विश्वासयोग्य रिश्ता बना रहना चाहिए।

5. विवाह अस्थायी व केवल इस ज़मीनी जीवन के लिए ही मान्य है (मत्ती 22: 30)

यीशु ने कहा कि उसके दूसरे आगमन के समय जब जी उठेगें, तो कोई ब्याह शादी न होगी। परन्तु वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के नाई होंगे(मत्ती 22:30)। अतः विवाह केवल इस धरती पर रहने वाले लोगों के लिए ही परमेश्वर की योजना है, स्वर्ग या आने वाली धरती के लिए नहीं। इस संसार में विवाह का अभिप्राय मसीह के गुणों को प्रगट करना, मसीहीयों के चरित्र को प्रशिक्षित करना तथा सन्तान उत्पन्न करना है।

(6) विवाह सामान्य है, लेकिन सभी लोगों के लिए उचित नहीं है। (मत्ती 19:10–12)

बाइबल में विवाह को मसीहियों व मसीही अगुवों के लिए सामान्य माना गया है (1 कुरिन्थियों 9:5; 1 तीमुथियुस 3:2) लेकिन यीशु मसीह (मत्ती 19:10–12) और पौलुस ने (1 कुरिन्थियों 7:32–35) में अविवाहितों से कुछ विशेष बात कही। परमेश्वर ने बहुत से लोगों को अपने जीवन में कुछ समय या सम्पूर्ण जीवन काल में अविवाहित रहने के लिए बुलाया है ताकि वे अपने जीवन में परमेश्वर के विशेष कामों को अन्ज़ाम दे सकें। परमेश्वर चाहते हैं कि ये लोग सम्पूर्ण समर्पण के साथ उसकी सेवा करें। परमेश्वर अविवाहितों से एक विशेष प्रतिज्ञा करते हैं कि उनकी आत्मिक सन्तानें विवाहित जोड़ों की शारीरिक सन्तानों से कहीं अधिक होगीं। उसने वायदा किया है कि वे परमेश्वर के राज्यों के कामों में अति फलवन्त होंगे (यशायाह 54:1–5)!

अविवाहित रहना एक वरदान है (1कुरिन्थियों 7:7,32–35; मत्ती 19:10–12), परन्तु इसे दूसरों के लिये कोई अनिवार्य नियम नहीं बनाना चाहिए (कलीसिया के लोगों के साथ जबरदास्ती नहीं करनी चाहिए)।

(7) विवाह सब लोगों के सामने सार्वजनिक तौर पर किया जाना चाहिए(मत्ती 22:9–11)

परमेश्वर ने विवाह के तीन आवश्यक तत्वों का र्निमाण किया है(उत्पत्ति 2:24)।

पहला, पति और पत्नी अपने माता पिता के घर को छोड़ दें। उन्हें भावनात्मक तौर पर अपने माता पिता से नहीं वरन अपने जीवन साथी के साथ एक होकर रहना है। उन्हें आर्थिक तौर पर अपने माता पिता पर निर्भर न होकर अपने पैरों पर खड़े होना और अपने परिवार की जिम्मेदारियों को निभाना है। उन्हें अब अपने माता पिता के चलाये नहीं चलना है, वरन जिस अधिकार को परमेश्वर ने उनके जीवन में नियुक्त किया है, उसके अधीन होना है। यदि सम्भव हो तो वे विवाह के उपरान्त अपने माता पिता के साथ न रहें बल्कि अलग रहकर अपने परिवार को मज़बूत बनाएं।

दूसरा, पति व पत्नी एक दूसरे के साथ मजबूती से बने रहें। उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि वे अपने सम्पूर्ण जीवन काल में एक दूसरे के साथ में बने रहेंगे।

तीसरा, वे दोनों एक तन हो जाते हैं। उनकी शारीरिक एकता उनकी आत्मिक, भावनात्मक व सामाजिक एकता की पराकाष्टा होती है।

एक युगल अपने विवाह की योजना की घोषणा करने के साथ ही अपने माता पिता से अलग होने के विचार को व्यक्त कर देता है। उसके पश्चात वह होने वाले अपने विवाह समारोह की तैयारी करना शुरू कर देते हैं। उनके विवाह समारोह पर वे निश्चित तौर पर अपने माता पिता के घर को छोड़ देते हैं। विवाह समारोह पर, दुल्हा व दुल्हन के माता पिता, भाई बहन, रिश्तेदार तथा अन्य लोग इस बात के गवाह होते हैं कि इन दोनों से अपने सम्पूर्ण जीवन काल के लिए एक दूसरे से विवाह करने का, एक दूसरे को प्रेम करने का, एक दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य होने का तथा अपने जीवन की सारी ही परिस्थितियों में एक दूसरे की सहायता करने फैसला किया है।

बाइबल में, विवाह कभी भी एकान्त में या छुप कर नहीं किया गया। यह सदैव ऐसा समारोह रहा है जिसमें दुल्हे व दुल्हन दोनों के परिवार ही एक महत्वपूर्ण भूमिका को निभाते हैं। पुराने ज़माने में, मग्नी या प्रण के समय पर जीवन साथी की पसन्द का खास ध्यान रखा जाना (उत्पत्ति 21:21),कई बार दुल्हे के परिवार को आर्थिक भेंट दिया जाना (उत्पत्ति 29:18,34:12) तथा दुल्हा दुल्हन को भेटें दिया जाना (उत्पत्ति 24:59,61; 1 राजा 9:16)शामिल हुआ करता था। हालांकि बाइबल में इस प्रकार की भेंटों की अनिवार्यता को नहीं दर्शाया गया है।

विवाह एक सार्वजनिक समारोह था। जिसमें कुछ निम्नलिखित तत्व शामिल हुआ करते थेः दुल्हा व दुल्हन विवाह के वस्त्र पहनते थे(भजन 45:13–14); दुल्हा व दुल्हन के सखा व सखी उनके साथ हुआ करते थे(भजन 45:14, यूहन्ना 3:29); लोग दुल्हे के साथ दुल्हन को ब्याहने के लिए उसके विवाह की प्रक्रिया से होकर गुजरते थे (मत्ती 25:1–13); विवाह का समारोह होता था; कई बार वह समारोह पूरे सप्ताह भर चलता था (मत्ती 22:1–14; यूहन्ना 2:1–10 ; न्यायियों 14:17)। विवाह समारोह का सबसे सुन्दर व महत्वपूर्ण भाग दुल्हा दुल्हन का एक दूसरे के साथ प्रतिज्ञा करना होता था जिसका गवाह स्वयं परमेश्वर होता था(मलाकी 2:14; नीतिवचन 2:17; यहेजकेल 16:8)! विवाह की रस्मों के बाद ही विवाह सम्पन्न होता था(उत्पत्ती 29: 21–23;व्यवस्थाविवरण 22:13–21)।

(8) मसीही विवाह को यीशु मसीह व कलीसिया के बीच रिश्ते के आधार पर देखा जाता है (इफिसियों 5:22–23)।

जिस प्रकार से मसीह कलीसिया का सिर है उसी प्रकार बाइबल में पति को पत्नी का सिर होने और जिस प्रकार से मसीह ने कलीसिया को प्रेम किया है उसी प्रकार अपनी पत्नी को प्रेम करने की आज्ञा दी गयी है। बाइबल यह भी कहती है कि जिस प्रकार कलीसिया मसीह के अधीन और उसका आदर करती है उसी प्रकार पत्नी भी अपने पति के अधीन रहे और उसका आदर करे। मसीही विवाह, कलीसिया और मसीह के रिश्ते को प्रदर्शित करता है (इफिसियों 5:22–23)।
अतः मसीही विवाह द्वारा संसार में यीशु मसीह की घोषणा होती है। एक अच्छे मसीही विवाह को देखने के द्वारा, संसार के लोग मसीह और मसीहियत के बारे में अधिकाई से सीखने पाते हैं। वे केवल उनके लिए मसीह के प्रेम के बारे में ही नहीं सुनते बल्कि वे मसीही विवाह में उस प्रेम को प्रगट रूप में देख पाते हैं। वे न केवल उनके प्रति बढ़ते हुए परमेश्वर के आनन्द के बारे में सुनते हैं बल्कि मसीही रिश्तों के बीच में उस आनन्द को प्रत्यक्ष रूप में देख पाते हैं। मसीही वैवाहिक सम्बन्ध मसीह के साथ सम्बन्ध के आकर्षण का शक्तिशाली साक्षी है। प्रत्येक मसीही विवाहित परिवार एक मिश्नरी की भूमिका निभा सकता है खास तौर पर जब कोई मसीही घर लोगों के लिए खुला हो और लोग ''वहां आकर देख सकें'' कि मसीही परिवार किस तरह से कार्य करता है।

5:22–25

प्रश्न 2. एक मसीही पति व मसीह पत्नी की परमेश्वर द्वारा दी गयी ज़िम्मेदारियां क्या हैं?

ध्यान दें। परमेश्वर ने प्रत्येक स्त्री व पुरूष को बनाया है। परमेश्वर ने स्त्री की रचना के साथ ही विवाह की योजना को तैयार कर दिया था (उत्पत्ति 2:18–24)। परमेश्वर को पति और पत्नी के बीच आपसी ज़िम्मेदारियों को भी निर्धारित करने का भी अधिकार है। वह जानता है कि उसकी रचना किस प्रकार बेहतर ढंग से काम कर सकती है। यदि पति व पत्नी परमेश्वर द्वारा ठहरायी ज़िम्मेदारियों का पालन करते हैं , तभी उनका विवाह सुन्दर व अद्भुत बन सकता है।

परमेश्वर एक दूसरे की सेवा निभाने के लिए पति व पत्नी को अधिकार प्रदान करता है। परमेश्वर ने पति व पत्नी को अलग तरीके से रचा है और व चाहता है कि वे एक दूसरे की सेवा करने के लिए परमेश्वर द्वारा दी गयी ज़िम्मेदारियों व अधिकारों का अलग अलग तरीके से इस्तेमाल करें। वह चाहता है कि पति विशेष तौर पर आपसी सम्बन्धों के बीच में पहल करके अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करे। और वह चाहता है कि पत्नी अपने पति को विशेष तौर पर गर्म व मज़बूत रिश्तों में आमन्त्रित करने के द्वारा अपनी सेवा को प्रगट करें।

परमेश्वर द्वारा मसीही पति की उसकी पत्नी के प्रति सौंपी गयी ज़िम्मेदारी उसे प्रेम करना व उसकी अगुवाई करना है।
मसीही पति को अपनी पत्नी को प्रेम करने के द्वारा उसकी सेवा करनी चाहिए। उसका अपनी पत्नी को प्रेम करना ठीक उस प्रकार है जिस प्रकार यीशु ने अपने लोगों अर्थात कलीसिया को प्रेम किया। उसे प्रेम करने का मतलब किसी लालच के बिना उसमें रूची दिखाना, पूरे मन से उसे स्वीकार करना और उसे उसकी सम्पूर्ण क्षमता में तक पहुंचने में स्वीकार करना है। प्रेम का अर्थ श्रेष्ठतम निःस्वार्थ भावना रखना और अपने आप केन्द्र बिन्दु बनने से इनकार करना है। प्रेम आत्म बलिदान चढ़ाने वाली सेवा है। प्रेम का अर्थ उसकी परवाह और उसका ख्याल करना है। प्रेम का अर्थ उसके साथ अच्छे और बुरे दिनों में तथा स्वास्थ्य या बिमारी में रहना है।

प्रेम को बड़ी सुन्दरता के साथ 1 कुरिन्थियों 13:4–8 में परिभाषित किया गया है। धीरजवन्त प्रेम इन्तजार कर सकता है। प्रेम उस पर अपनी भलाई को प्रगट करने के लिए जबरदास्ती नहीं करता, बल्कि अपनी भलाई प्रगट करने के लिए उचित समय का इन्तज़ार करता है। कृपालु प्रेम सहायता करता है और वह उसकी सेवा करने का एक भी अवसर हाथ

से नहीं जाने देता। जलन न रखने वाला प्रेम उदारता के साथ उसकी सराहना करता और उसको श्रेय देता तथा उसका आदर करता है जिसके वह योग्य भी है। जो प्रेम घमण्ड नहीं करता वह विनम्र होता है और अपनी उपलब्धियों पर फूलता नहीं और न ही अपनी योग्याओं से उसे आकर्षित करने का प्रयास करता है। जो प्रेम फूलता नहीं वह प्रेम उसके साथ सम्बन्ध रखने के दौरान अपनी कमजोरी या ताकत के प्रति दीन व नम्र रहता है। प्रेम जो निरसता के साथ व्यवहार नहीं करता वह उसके साथ उचित व सोचसमझ कर व्यवहार करता है। अपनी ही इच्छा पूरी न करने वाला प्रेम निःस्वार्थ भावना के साथ खुद से बढ़कर उसकी चिन्ता करता है। आसानी से क्रोध न करने वाला प्रेम नम्रता के साथ उसके द्वारा उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों व चोटों को सह लेता है।

मसीही पति को अपनी पत्नी की अगुवाई करने के द्वारा उसके प्रति अपनी सेवा को निभाना चाहिए। पत्नी की अगुवाई करने का अर्थ उस तरीके से अगुवाई करना है जिस प्रकार मसीह अपनी कलीसिया की अगुवाई करता है। पति ने अपनी पत्नी की अगुवाई इस प्रकार करनी चाहिए जिस प्रकार एक चरवाहा अपनी भेड़ों की चरवाही करता हैः उसने उसे खिलाना चाहिए, उसकी देखभाल करनी चाहिए, उसकी सुरक्षा करना और हर परिस्थिति को पार करने में उसकी सहायता करनी चाहिए। जिस प्रकार से एक भण्डारी अपने भण्डार का प्रबन्ध करता है उसी प्रकार पति को अपनी पत्नी की अगुवाई करनी चाहिएः उसे उसकी सम्पत्ति, गतिविधियों व उसकी रूची की देखभाल करनी चाहिए, और उसकी परमेश्वर के मार्गों में अगुवाई करनी चाहिए। पति को एक सेवक के समान उसकी सेवा करनी चाहिएः उसे उस क्षेत्र में उसकी सहायता करनी चाहिए जहां उसे मदद की सबसे अधिक जरूरत हो।

परमेश्वर द्वारा मसीही पत्नी की उसके पति के प्रति सौंपी गयी ज़िम्मेदारी उसे प्रेम करना व उसकी सहायता करना है।
मसीही पत्नी को अपने पति को प्रेम करने के द्वारा उसकी सेवा करनी चाहिए। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि पत्नी को अपने पति व बच्चों से प्रीति रखने वाला, संयमी व पवित्र, घर का कारबार करने वाली, भली और अपने पति के आधीन रहने वाली होना चाहिए ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए(तीतुस 2:4–5)। प्रेम का उसके साथ जीवन की अच्छी या बुरी परिस्थिति में, स्वास्थ्य में या बीमारी में रहना है।

मसीही पत्नी को अपने पति की सहायता करने के द्वारा उसकी सेवा करनी चाहिए। बाइबल हमें बताती है कि मसीही पत्नी को अपने पति के आधीन रहना है (इफिसियों 5:22–24; 1 पतरस 3:1–6) अपने पति का आदर करना है (इफिसियों 5:33)। वह अपने पति की अगुवाई के आधीन होकर व उसका आदर करने के द्वारा अपने पति की सेवा करती है। 'आधीन' होने का अर्थ गुलाम बनना नहीं वरन एक सेवक के समान उसके अधीन होना है (उत्पत्ति 2:18)। इसका अर्थ है कि वह स्वेच्छा से अपने पति के दल का एक उत्तम सदस्य है। उसके दल का सदस्य होने के नाते, वह अपने पति को सकारात्मक व सम्भव सुझाव , विचार, सहायता, सहयोग प्रदान करती है। वह अपने व्यक्तिगत जीवन, विवाह, उनके परिवार व उनके समाज से सम्बन्धित सारे महतवपूर्ण मुद्दों पर विचार विमर्श करती है। वह अपने पति के साथ मिलकर अच्छे निर्णय लेती है और पति के साथ मिलकर उने निर्णयों के परिणामों पर चर्चा करती है। यदि किसी बात पर वे सहमत नहीं हो पा रहे हैं तो ही उसे अपने पति को अन्तिम निर्णय लेने देना व उस निर्णय की परिणाम की जिम्मेदारी उठाने देना चाहिए। पत्नी की पति के प्रति अधीनता परमेश्वर की मांग पर आधारित है इसलिए जब पति गलत कामों में पत्नी की अधीनता की अपेक्षा करे, तो वह कोमलता के साथ इनकार कर सकती है (प्रेरितों के काम 5:29)।

पति का आदर करने का अर्थ अपने विचारों को बड़े सम्मान व तमीज़ के साथ सामने रखना तथा परमेश्वर को अपने तरीके से काम करने की अनुमति प्रदान करना है। इसका अर्थ पति की सलाह को ध्यान पूर्वक सुनना है। इसका अर्थ है कि वह अपने पति को अपनी सारी योजना में शामिल करे तथा अपनी योजना की प्रगति के बारे में उसे बताए। इसका अर्थ बिना पति द्वारा सहायता मांगे वह उसकी सेवा करे। इसका अर्थ धीरज के साथ उसकी बातों को सुनना और उसकी समस्याओं व विचारों को समझना है।

जब कोई पति उस तरीके से अपनी पत्नी की अगुवाई करना प्रारम्भ कर देता है जैसे मसीह अपनी कलीसिया की अगुवाई करता है तो पत्नी के लिए अपने पति का आदर करना व परिवार में उसकी अगुवाई के प्रति अधीन होने में कोई दिक्कत नहीं होती। बच्चों के लिए सबसे उत्तम स्थान जहां वे प्रेम और आदर करना व अगुवाई तथा अधीनता सीख सकते हैं उनके मसीही अभिभावकों का दैनिक रिश्ता होता है।

5:26–27

प्रश्न 3. उसे वचन के जल से पवित्र और शुद्ध करने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। मसीह ने हमेशा के लिए एक ही बार में कलीसिया को पूर्णतः पवित्र कर दिया है, हमेशा के लिए शुद्ध कर देने का अर्थ है कि उसने अपने वचनों के जल से शुद्ध कर दिया है। यह पानी के बपतिस्में का प्रतीक है , वचनों के अनुसार (सुसमाचार की उदघोषणा के अनुसार, उदाहरण इफिसियों 6:17 ; 1 पतरस 1:22–23) जो अप्रत्यक्ष पवित्र आत्मा के बपतिस्में का प्रत्यक्ष चिन्ह व मुहर है।

मसीह लगातार अपने वचनों द्वारा आज भी मसीहियों को शुद्ध करता है जो पवित्र आत्मा के द्वारा लोगों के जीवन भर काम करता है। उसका लक्ष्य मसीहियों को निष्कलंक व बेदाग कलीसिया के रूप में प्रस्तुत करना है। इस तरह से मसीह कलीसिया को मेम्ने के दूसरे आगमन पर उसके विवाह के लिए दुल्हन के रूप में तैयार करता है। लेकिन कलीसिया भी खुद को एक मेम्ने की दुल्हन के रूप में तैयार कर रही है (प्रकाशितवाक्य 19:7)। मेम्ने व उसकी दुल्हन (कलीसिया) के विवाह के समय वे दोनों हमेशा के लिए प्रेम की संगति व नयी धरती के सिद्धता के लिए एक हो जाएंगे।

5:32

प्रश्न 4. यह गुप्त रहस्य क्या है?

ध्यान दें। यह रहस्य पति व पत्नी के बीच के रिश्ते के बारे में बात नहीं करता–विवाह कोई रहस्य नहीं है। यहां पर विवाह की तुलना मसीह और कलीसिया के मिलन से की गयी है। मसीह द्वारा उद्धार का कार्य उन पापी व अयोग्य लोगों के लिए किया गया है जो उसकी कलीसिया बन गये और जिनमें पवित्र आत्मा द्वारा वह इतनी धनिष्ठता से घर करता है जिसे धरती में किसी भी विचारधारा के तहत परिभाषित करना मुश्किल है। क्योंकि मसीह व उसकी कलीसिया के बीच में रिश्ता इतना गहरा व मजबूत है, कि मसीही वैवाहिक रिश्ता इतनी महिमित ढंग से कार्य कर सकता जिससे विवाहित जोड़ा आनन्द से भर जाए। मसीही विवाह के कारण दूसरे लोगों को आशीष वा परमेश्वर को महिमा मिलती है।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद का कौन सा सत्य मसीहियों के लिए सम्भवतः उपयोगी है?

बाँटें व लिखें। आइये हम एक दूसरे के साथ विचार विमर्श करके इफिसियों 5:22–33के आधार पर इस्तेमाल में आने वाली बातों की एक सम्भावित सूची बनाएं।

ध्यान दें। इनमें से कौन सी उपयोगी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि आप उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में इस्तेमाल करें?

लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को अपनी कॉपी में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बाटंने में स्वतन्त्र महसूस करें। (ध्यान रखें कि हर एक समूह में लोग अलग सच्चाईयों का इस्तेमाल करेंगे या उसी सच्चाई का अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगे। सम्भावित इस्तेमाल की सूची निम्नलिखित है।)

1. इफिसियों 5:22–33 से इस्तेमाल किये जाने वाले सम्भावित तत्व।

5:22. दोनों के लिए। पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन रहें। परन्तु कुछ परिस्थितियां ऐसी भी हैं जिसमें पति को पत्नी के अधीन होना चाहिए (इफिसियों 5:21)। अध्ययन करें कि मसीही कलीसिया किस प्रकार यीशु मसीह के अधीन होती है। इस रीति को अपने जीवन साथी के साथ रिश्ते में इस्तेमाल करें।

5:23. पतियों के लिए। अध्ययन करें कि यीशु मसीह किस प्रकार कलीसिया का सिर है और वह किस प्रकार मसीही कलीसिया की अगुवाई करता है। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में करें।

5:25: पतियों को लिए। अध्ययन करें कि किस प्रकार यीशु मसीह कलीसिया को प्रेम करता तथा मसीही कलीसिया के लिए अपने आप को देता है। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में करें।

5:26–27 पतियों के लिए। अध्ययन करें कि यीशु मसीह किस प्रकार मसीही कलीसिया को शुद्ध करके उसे अपने वचनों के द्वारा एक महीमित कलीसिया बनाता है। इसका अर्थ है उसे अधिक से अधिक मसीह के समान बनाना। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में करें।

5:29 पतियों के लिए। अध्ययन करें कि यीशु मसीह मसीही कलीसिया को खिलाता व उसकी देखभाल करता है। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपनी पत्नी के साथ रिश्ते में करें।

5:31 दोनों के लिए। अपना मूल्यांकन करके देखें कि कहीं आप किसी न किसी तरह से अपने माता पिता पर निर्भर तो नहीं हैं। एक दूसरे की अपने अपने माता पिता को छोड़ने और एक दूसरे से जुड़ने में सहायता करें।

5:33 पत्नियों के लिए। अध्ययन करें कि बाइबल में मसीही कलीसिया किस प्रकार यीशु मसीह के प्रति आदर को व्यक्त करती है। प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल अपने पति के साथ रिश्ते में करें।

2. इफिसियों 5:22–23 में प्राप्त जानकारियों को व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल किये जाने के उदाहरण।

पतियों के लिए। मैं यीशु मसीह के समान अगुवा बनने का नया समर्पण करता हूँ। जिस किसी क्षेत्र में जरूरी हो मैं अपनी पत्नी के सहायता करना चाहता हूँ। मैं उसकी देह और आत्मा दोनो की देखभाल करना चाहता हूँ। मैं उसकी सुरक्षा करना और उसके जीवन की कठिन परिस्थितियों से उसे बाहर निकालना चाहता हूँ। मैं सारी स्वार्थी भावनाओं को त्यागकर निःस्वार्थ भावना के साथ उसकी सेवा करना चाहता हूँ।

पत्नियों के लिए। मुझे अधीनता के रूप में नई समझ प्राप्त हुई है। अधीनता तब प्रमाणित होती है जब कोई पत्नी सक्रिय रूप में अपने पति को सुझाव देती, और बिना पति की अगुवाई व परिवार की जिम्मेदारियों से मन चुराये योजना बनाती और व्यवहारिक काम करती है। पतियों को हमेशा यह याद रखना चाहिए कि उनकी पत्नियां तब ही निःस्वार्थ भावना के साथ उनकी सहायता कर सकती है जब वे पूर्ण निःस्वार्थ भावना के साथ अपनी पत्नियों को प्रेम करें।

कदम 5. प्रार्थना	**प्रतिउत्तर**
आइये इफिसियों 5:22–33 में परमेश्वर द्वारा सिखाई गये सत्यों के आधार पर प्रार्थना करें। (जो कुछ आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है, प्रार्थना में उसका प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करना सीखें। याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग विषयों के लिए प्रार्थना करेंगे)	

5	**प्रार्थना** (8मिनट)	**[मध्यस्थता]** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में **लगातार प्रार्थना करें।** एक दूसरे तथा संसार के अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह का अगुवा*** *:* समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. सर्मपणः चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ इफिसियों 5:22–33 पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। रोमियों 1–4 अध्याय पर रोज़ आधा अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. याद करनाः संगति। 1यूहन्ना 1:7
4. प्रतिदिन बाइबल की 5 याद की गयी आयतों को दोहराएं।
5. प्रार्थनाः किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)

चेलों को बनाने के सम्बन्ध में वर्तमान स्थिति को किसी कॉपी में लिखें। जिसमें आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।